ॐ

मिथ्याप्रलापपरिछेदन

जिसमें

मुन्शी अमनसिंह साहब सुनपत निवासी
की छपवाई हुई मूर्ती पूजनके मिथ्या दृष्टांतों
की पुस्तक प्रत्मा चालीसी के उत्तर लिखे हैं

जिसको

लाला कन्हैयालाल साहब जोहरी साकिन
बैदवाड़े देहली ने छपवाये हैं

अपरेल सन् १८९७ ई

ज्ञान प्रेस देहली में लाला जैनारायन के प्रबंध
से छापे गये

ॐ

सज्जन पुरुषोंको बिदित्त हो कि मुन्शी अमन
सिंह जैनी सुनपत नगर निवासीने एक पोथी
प्रत्मा चालीसी बनाई है· उसमें लिखा है कि
यह पुस्तक मैंने ढूंडक भाइयोंके हितार्थ
छपवाई है· मालूम होताहे कि मुन्शी अमन
सिंह ने यह समझा होगा कि हमारी बराबर को
ई बुद्धवान न होगा जो हमें उत्तरदेगा परंतु उन्हें
चाहियेथा कि पहले तारीख़ २१ दिसम्बर सन
१८९६ ईस्वी को श्रीमती पार्वतीजी महाराजके
साथ दिगाम्बरी भाइयोंकी चरचा हुई थी उस
में पंडित शोचरनजी ने यह इक़रार कियाथाकि
हम तुम्हारे उबाई सूत्र और आवशक के मूलपाट
में मंदिरका बनवाना और प्रत्मा की पूजा करनी हुक्म
महाबीरजीका दिखलादेंगे सो आजतक उस
का जवाब नहीं दिया। अब बुद्धिवान पुरुष को
ख़्याल करना चाहिये कि दिगाम्बरी भाइयोंको

पहले मंदिर का बनवाना और प्रत्मा का पूजना आवश्यक और उबाई सूत्र में दिखलाना चाहिये था तब दूसरी पुस्तक प्रत्मा चालीसी छपवानी थी· अब हम प्रत्मा चालीसी का उत्तर जिसमें अनेक शास्त्रों की झूठी शाखा देकर मुन्शी अमन सिंह ने छपवाई है· सो लिखते हैं॥

मुन्शी अमनसिंह के सवालों के जवाब

पांचवें पृष्ट में लिखा है कि ढूंढये अथवा साध मार्गी भाई प्रत्मा की चार तरह से निंदा करते हैं प्रथम अचेतन· दूसरे कृत्रम· तीसरे एकेंद्री· चौथे आरंभ· अब दिगाम्बरी भाई अचेतन का यह जवाब लिखते हैं कि जैसे भगवान की बाणी जड़ और पुद्गल है मगर सुनने से ज्ञान होता है ऐसे प्रत्मा जड़ है मगर प्रत्मा के देखने से भगवान का ध्यान पैदा होता है· अफ़सोस है तुम्हारी अक़ल पर कि भगवान की बाणी अरूपी सूर्त अद् ज्ञान को जड़ और पुद्गल लिखा है मगर इससे साफ़ ज़ाहर होगया कि इस पोथी का बनाने और छपवाने वाला जैन शास्त्र से नावाक़िफ़ है क्यों कि किसी जैन शास्त्र में भगवान की बाणी को जड़

और पुद्गल नहीं लिखता. अगर कोई यह बात
कहै कि हम शास्त्र को वाणी मानते हैं. मगर यह
कहना झूठ है. क्योंकि शास्त्र के सुनने और पढ़ने
से अनेक पुरुष बिद्यावान हुये हैं. मगर प्रतमा
के देखने से कोई ज्ञानवान होता नहीं सुना और
हुआ होवे तो द्वादशांग बाणी के मूलपाटसे
साबित करो. और अगर कोई ऐसा कहै कि प्रतमा
के देखनेसे धर्म ध्यान पैदा होता है. यह भी
उसका कहना झूठ है. क्योंकि प्रतमा के देखने
से ज़रूर पांव हाथ धोनेकी और फूल फल
चढ़ानेकी और धूप दीप आरती और ढोलक
मृदङ्ग झांज मंजीरा. नगारा इत्यादिक छः
कायाके जीवों की हिंस्या करनेकी मनमें आवेगी
यह सब भगवान ने आश्रवद्वार में कहे हैं.
तीनकाल में धर्म नहीं होता. फिर प्रश्न ६ में
लिखा है कि मोक्ष गये पीछे तिर्थंकरोंका शरीर
को देवता बंदनादिक करते हैं वह भी जड़ है.
॥जवाब॥ जो देवता निर्वाण महसा करते हैं
वह धर्मका काम नहीं वह तो जीत विव्यहार है
अगर तुम धर्म मानते हो तो तुमसे साधमार्गी भाई

पूछते हैं कि तिर्थंकर मोक्ष गये पीछे जो शरीर प
ड़ा रहता है उसको साधू नमस्कार करे कि नहीं.
अब बुद्धीवान पुरुषको ख़्याल करना चाहिये
कि धर्मका काम है तो साधू नमस्कार क्यों नहीं
करे इससे साफ़ ज़ाहर होगया कि निरजीव शरी
र को नमस्कार आदिक करनेमें धर्म नहीं.
फिर पृष्ट ६. ७ में लिखा है कि जैसे तुम नवना
दिक बनाके पढनेसे धर्म मानते हो. ऐसेही
हम प्रत्मा को बनाके पूजनेमें धर्म मानते हैं.
सो यह तुम्हारा दृष्टान्त झूठा है क्योंकि हम
साधमार्गी नवनढालकी मूर्ती बनाके नहीं पढ़
ते पूजते अगर हम नवनढालकी मूर्ती बना
के पढ़ते या पूजते तो तुम्हारा दृष्टांत मिलता.
इसवास्ते तुम्हारा दृष्टांत झूठा है. मगर हम
नवनढाल बनाते हैं वह तो मतसुत ज्ञानका
पेटा है. अगर दिगाम्बरी भाई यह कहैं. कि
हमारी मूर्ती बनानाभी मतसुतका पेटा है तो
उनसे यह पूछते हैं कि मतसुत ज्ञानके कित
ने भेद हैं और मूर्ती कौनसे भेदमें है इसका
जवाब दो॥ फिर पृष्ट ७ में लिखा है. कि

पुस्तक जो है कागज़ और सिहाई है · और यह भी एकेंद्री है उसको नमस्कार क्यों करतेहो सो हम पुस्तक को नमस्कार और पूजा नंहीकरते · मगर यह अक़ल तुम्हारी अधिक है जो पचेंद्री होकर एकेंद्री और जड़को नमस्कार और पूजा करतेहो ॥ फिर पृष्ठ ७ में लिखाहै कि पोथी पचेंद्री लिखेता है और उसको तुम अच्छा समझतेहो और प्रत्मा पचेंद्री घड़ता है उसको तुम क्यों नंही मानते · सो पोथीके बांचनेसे मनुष्यको बिद्या प्रापत होतीहै और मूर्तीके देखनेसे या पास रखनेसे कोई बिद्या प्राप्त नंही होती · इसवास्ते पोथीको अच्छा कहतेहैं ॥ फिर पृष्ठ ८ में लिखाहै कि पोथी पढ़नेसे ज्ञानरूपी बोध पैदा होताहै · यह तो ठीक है · मगर यह जो लिखाहै कि प्रत्मा की पूजा करनेसे आरत रुद्र ध्यान दूर होता है · यह बात ग़लत है · क्योंकि जो मंदिरमें जातेहैं वह अच्छा चितराम और सुगंदी आदि क देखके ख़ुश होतेहैं · सो अच्छी चीज़ अथवा अच्छे पुद्गलोंकी इच्छा और देखके ख़ुशहोना

यह मोहनी कर्मका लक्षण है और जीवोंकी हिं
स्याका ध्यान करना तो किनारे रहा खुद अपने
हाथोंसे षट कायाजीवोंकी हिंस्या करतेहैं ॥
इसलिये पूजाकरनेमें आरत और रुद्र ध्यान
का कारन मालूम होताहै ॥

फिर पृष्ट ८ व ९ में लिखाहै कि इन्द्र और
देवतोंने पंच कल्यानक करके एक भवधारी
होगये और मुक्त जावेंगे. सो यह तुम्हारा लिख
ना झूठाहै. क्यों कि द्वादसांग बाणी के मूल
पाट में नहीं चला अगर चलाहो तो दिखाओ

फिर पृष्ट ९ में लिखाहै कि भरतजी ने रिखभ
देवजीकी पूजा करी और अवध ज्ञान पाया और
कैलास प्रबत पर मंदिर बनवाए. और प्रत्मा
धरीहै सो यह तुम्हारा लिखना बिल्कुल ग़लत
है क्यों कि द्वादसांग बाणी के मूल पाट में
भरतजीने मंदिर बनवाना और पूजा करनेका
ज़िक्र भी नहीं चला अगर चलाहो तो दिखलाओ

फिर पृष्ट १० में लिखाहै कि श्रेणक राजाने
महावीरजी की पूजा करी यह झूट है क्योंकि
द्वादसांग बाणीके मूलपाटमें कहीं ज़िक्र भी

नहीं चला अगर चला होवे तो बतलाओ ॥
फिर पृष्ठ १० व ११ में लिखा है कि जूती पहरके साधूको बन्दना करने जाते हो तब रस्तेका पाप तुमको लगता है कि साधूओं को लगता है अगर तुमको लगता है तो तुम क्यों जाते हो और साधूओं को लगता है तो साधू मनें क्यों नहीं करते सो यह तुम्हारा लिखना बे समझ पनेका है क्योंकि साधू नहीं कहते कि जूती पहर कर आओ. अगर तुम यह कहो कि साधू मने क्यों नहीं करते. सो साधू महाराज तो एक जूती क्या कुल संसार कोही मिथ्या कहते हैं. और त्यागने का उपदेश देते हैं. मगर करना न करना तो ग्रहस्थी के अखतियार है. और कोई मंदिर पंथी ऐसी बात कहे कि जैसे तुम साधूवों को नमस्कार करने वास्ते जूती सवारी आदिक करके जाते हो ऐसेही हमारी पूजा समझो सो हम साधमार्गी भाई जूती पहर के और सवारी आदिक करके जाते हैं हम उसमें धर्म नहीं समझते हम उस में पाप समझते हैं. अगर तुम भी पूजा करना धर्म नहीं समझते

तो तो ठीक है और जो तुम धर्म समझते होतो तुम्हारा पूर्वोक्त कहना मिथ्या हुआ · अगर तुम पाप समझते हो तो तुमको पूजा नहीं करनी चाहिये क्योंकि भगवान की आज्ञा पाप की नहीं है इसवास्ते हिंस्या धर्म को छोड़ो और दया धर्म ग्रहण करो जो तिरनो चाहते हो ॥

फिर पृष्ट ११ व १२ में लिखा है कि पूजा करने में हिंस्या थोड़ी और पुन्य घना लिखा है · यह तुम्हारा लिखना झूठा है क्योंकि पूजा में छः काया जीओं की हिंस्या होती है और दया किसी जीव की नहीं होती · इसवास्ते पूजा में पाप सरासर होता है और कोई पुन्य का कारण नहीं मालूम होता ॥

फिर पृष्ट १२ में लिखा है कि इस्त्री देखने से जैसे राग पैदा होता है ऐसे ही मूर्ती देखने से धर्म का राग पैदा होता है · सो यह तुम्हारा दृष्टांत मिथ्या है और बिल्कुल बे समझपने का बचन है · प्रत्मा के देखने से धर्म का राग तो पैदा होना द्वादश अंग बानी में कहीं नहीं लिखा पर ज़ाहर में ऐसा देखने में आता है

कि प्रत्मा को देखकर नगारा इत्यादिक और बाजे बजाने और फूलफल आदिक चढ़ानेमें छः काया की हिंस्या के सिवाय कोई बैराग्य भाव नंही अनेक शास्त्रों में देखने और सुन्ने से आता है और इस वक्त भी सुन्ने और देखने में आताहै कि जवान स्त्री अति सुन्दर देख कर अनेक कामी पुरष माता पिता और भाई बन्द आदिक को छोड़कर उस स्त्री के राग्य में लौलीन होजातेहैं परंतु द्वादसांगबाणी के मूल पाट में किसी जगह देखने में नंही आया । कि भगवान की मूर्ती को देख कर किसी को बैराग्य भाव पैदा हुआ हो और इस वक्तभी देखने और सुन्ने में नहीं आता कि किसी अनमती अथवा बेश्नों और आरिया समाज और मुसल्मान इसाई इन्होंनेजैन मत की मूर्ती देखकर बैराग्य भाव अथवा जैन धर्म की सरधा अख्त्यार करीहोवे मगर यह देखने और सुन्ने में आता है कि मूर्ती को शाहर में फिराते हुये देखकर अनेक तकरार और झगड़े सुन्ने में आये हैं कि द्वेष

भाव हुआ ॥

फिर पृष्ट १३ में लिखा है कि नाम द्रव और भाव तीन नखेपे मानते हो और थापना नखेपा क्यों नहीं मानते· सो ग़लत है· हम चारों नखेपे जो जहां पर काम देता है वहां मानते हैं मगर एक भाव नखेपेको काज साधक मानते हैं· और नाम दरव्य थापना इन तीनोंसे काज की सिद्धी नहीं होती अगर तुम कज की सिद्धी मानते हो तो तुम्हारे से साध मार्गी भाई पूछते हैं कि कोई पुरुष महाबीर नाम से तुमको मिल जावे तब उसको तुम नमस्कार और पूजा करो कि नहीं· तो तुम यह कहोगे कि हम उसकी पूजा नहीं करें क्योंकि उसमें महाबीरजी सरीखे गुण नहीं· अब साधमार्गी भाई कहते हैं कि थापना नखेपा जो मूर्ती है उसमें भी तो महाबीर सरीखे गुण नहीं उसको क्यों मानते हो· अब बुद्धवान मनुष को सोचना चाहिये कि जैसे मंदिर पंथी नाम नखेपे वाले मनुष्य की पूजा नहीं करते ऐसेही थापना नखेपेका पूरा भेद नहीं जानते· अगर जानते तो ऐसा कभी न

लिखते कि तुम तीन मानते हो और थापना नहीं मानते. मगर हमतो जैसे सूत्र में लिखे है उसतोर मानते हैं. और जिस पुरुष को नखेपोंका पूरा हाल देखना होवे तो अणुयोग द्वार सूत्र में देख लेना ॥

फिर एष्ट १४ में लिखा है कि जीवाभिगम सूत्र में बिजे देवताने अर्हितम मूर्ती की पूजा करी. सो देवता मूर्ती की पूजा करतेहैं वह धर्म का कारण नहीं वह तो जीत ब्योहार है धर्म नहीं. अगर धर्म होता तो रोज़ पूजा करता और जो देवता समदृष्टी मिथ्याती पैदा होता है सब पूजा करते हैं जो धर्म और त्रयंकरोंकी मूर्ती हो तो मिथ्याती देवता क्यों पूजे और देवता एक मूर्ती हीकी पूजा नहीं करता वह तो शास्त्र बावड़ी किवाड़ों की पुतली इत्यादिक अनेक की पूजा करतेहैं. जो धर्म है तो सबकी पूजामें धर्म होना चाहिये. इस वास्ते देवता की पूजा में धर्म सिद्ध नहीं होता ॥

फिर एष्ट १४ में लिखाहै कि उबाई सूत्र में अंबड श्रावग ने पूजा करी. सो यह तुम्हारा

लिखना झूठा है क्योंकि पूजा करनेका ज़िक्र
नहीं चला अगर चलाहो तो मूलपाटसे साबि
तकरो कि कितने प्रकार की पूजा करी है ॥
फिर पृष्ट १५ में लिखा है कि ज्ञाता सूत्र में दरोप
दी ने पूजा करी है सो दरोपदी ने पूजा करीहै
वह भी धर्मका कारण सिद्ध नहीं होता क्योंकि
प्रथम तो दरोपदी के माता पिता मिथ्याती हैं
क्योंकि दरोपदी के विवाह में जो राजे आयेथे उन
के वास्ते मांस और मद्रादिक आहार तैयार क
रा है अगर श्रावग धर्म में होता तो मांस और
मद्रा कभी न करता और दूसरे दरोपदी भी उस
वक्त मिथ्यातन थी क्योंकि नियाणे सहित
थी नियाणे से पहले श्रावग का धर्म पैदा
नहीं होता और जिसमें दरोपदी पूजा करने
वास्ते गईथी वह भगवान का मंदिर नहीं
चला वह तो जिण घर चलाहै सो तिर्थंकरों
के घर नहीं होता क्योंकि वह घर का त्यागन
पहलेही करदेते हैं इस वास्ते दरोपदी की पू
जा करनी धर्म सिद्ध नहीं होता ॥ फिर पृष्ट १५ में
लिखाहै कि उपासग दिसा सूत्र में आनन्द

श्रावग ने परतीर्थी और परदेव का त्याग करा
है और निजदेव और निज तीर्थ रखा है, सो
आनन्द श्रावग ने सुद्धदेव और सुद्धगुरु रखा
है और असुद्धदेव असुद्धगुरु छोड़ा है, तुम्हा
रा लिखना मिथ्या है, क्योंकि तीर्थ रखने का
ज़िक्र भी नंही और मंदर बनवाना और पूजा
करनी नंही चली, अगर मंदिर बनवाना और
पूजा करनी चली है तो मूलपाट से साबित करो
फिर पृष्ट १५ में लिखा है कि सूत्र सुगड़ाअंग
में अभै कुमार ने आद्र कुमार पास प्रत्मा भे
जी उससे आद्रकमार को ज्ञान पैदा हुआ है,
सो यह तुम्हारा लिखना झूठा है, क्योंकि सू
त्र सुगड़ाअंग के मूलपाट में प्रत्मा भेजने का
ज़िक्र भी नंही चला, अगर चला हो तो दिखला
ओ, हम मान लवेंगे, अगर नंही दिखलाओगे
तो तुम प्रत्मा पूजनी छोड देना॥
फिर पृष्ट १६ में लिखा है कि जंगा चारण बि
द्या चारण साधओं ने प्रत्मा पूजी भगोती सूत्र में
चली है, सो यह तुम्हारा लिखना झूठा है,
क्योंकि पूजा करनी सूत्र में नंही चली अगर चली

है तो बताओ कितने प्रकार की पूजा करनी चली है मूलपाठ से साबित करो. मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि मंदिरपंथी अपनेही मुख से कहतेहैं कि साधूको पूजा नंहीकरनी और अपने ही मुखसे पूजा करनी लिखीहै ॥

फिर पृष्ट १७ में लिखाहै कि गरा श्रावग आरंभ कर के स्वर्ग में गयाहै सो यह तुम्हारा लिखना झूठा है क्योंकि द्वादशांग बाणी के मूलपाट में गरा श्रावग का ज़िक्रभी सुना और देखा नंही अगर चलाहै तो दिखलाओ और ज़रा ख्याल करके देखो कि आरंभ करके स्वर्गजावे लिखाहै तो दया करके क्या नर्क जावेंगे मगर यह बात कभी नंही होसक्ती जो आरंभ करके स्वर्गजावेंगे आरंभ वालेतो सदां नर्कजाने का कारन मालूम होताहैं और दयावाले सदां स्वर्गजानेका कारन है ॥

फिर पृष्ट १८ में लिखाहै कि आठ द्रव चढ़ाने से जीव मोक्ष पाताहै यह आपकी समझकी ग़लतीहै अगर आठ द्रव चढ़ानेसे जीव मोक्ष पाता तो त्रिथंकर देव महाराज इस क़दर

तब संजम करनेका कष्ट क्यों उठाते इन्हीं आठ द्रव से प्रतमाकी पूजाकरके मुक्ती चलेजाते किसी तिर्थंकरदेव महाराज ने संसारमेंबैठेहुये या संजमलेके किसी प्रतमाकी पूजा नहिंकरी अगर करीहै तो मूलपाट से साबितकरो न जिनिंद्र देवमहाराज ने किसीके वास्ते हुक्म दिया कि इस अष्टद्रव से प्रतमाकी पूजाकरो तुम्हारी मुक्तीहो जायगी जो किसी आवग को ऐसा हुक्म दिया होतो उस्का नाम बतलाओ वाह साहब वाह ऐसी मिथ्या घडंत घड़घड़ के क्यों भोले मनुष्योंको बहकारहेहो ॥ फिर पृष्ट २६ में लिखाहै कि साधूकी पूजा से हज़ार गुना फल जिण पूजामेंहै और जिण पूजासे हज़ारगुना फल सिद्धोंकी पूजा में और सिद्धोंकी पूजासे हज़ारगुना फल प्रतमाकी पूजा में है यह तुम्हारा लिखना मिथ्याहै क्यों कि द्वादशांगबाणी में ऐसा कहीं नहीं लिखा अगर लिखाहै तो मूलपाट से साबितकरो · और प्रतमा की पूजाकरके कौन मुक्ती गया उसका नाम बतलाओ ॥

इस पुस्तक में प्रतमा चालीसी की झूठी

प्राषाओं के उत्तर लिखे हैं जिनका ज़िक्र
लाला जनेश्वरदास साहब ने किताब दूधका
दूध पानी का पानी के पंधरह सफ़े ग्यारह
सतर में लिखा है कि मूर्तीपूजन का सब सू
त्रों में बराबर ज़िक्र मोजूद है चुनाचे हमने
एक किताब प्रत्मा चालीसी छापी है जो पं
डित दयानत्त राय की बनाई हुई है जिस्का
नाम प्रत्मा बहत्तरी है ओर हकीम सीतल्ल प्र
शाद साहब ने उस्का ख़ुलासा करके प्रत्मा
चालीसी नाम रखा है ओर मुन्शी अमनसिं
ह ने छपवाई है· इन उतरों के देखने से मालू
म होगा कि पंडित दयानतराय व हकीम
सीतल्लप्रशाद साहब व लाला जनेश्वरदास
साहब व मुन्शी अमनसिंह साहब द्वाशांग
बानी से जो भगवंतों के कहे हुये बचन हैं
नावाक़िफ़ हैं ओर उसके मतलब को भी
नहीं जानते· सिर्फ़ अपने मन की घड़ंत अ
पना मन राज़ी करने के लिये घड़ली· इस
बातपर बड़ा अफ़सोस आता है कि उनको
इसबातका भी ख़्याल न हुआ कि। किताब

मूर्तीचालीसी दो पैसे को बेचेंगे और चाहें जो ख़रीदार उसको लेकर पढ़ेगा और उस्को ह मारी अक़ल की बुराई भलाई ज़ाहिर होगी सो दिगम्बरी भाईयें तुमको ऐसी झूठी शास्त्रों की शाष नहीं छपवानी चाहिये थी· मगर इसवक्त हम साधमार्गीभाई तुमको लोकोक्त जैनी भाई समझकर हित शिष्या देते हैं कि अगाड़ी के वास्ते ऐसी झूठी शास्त्रों की शाष न लिखना अगर लिखोगे तो जो झूठी शास्त्रों की शाष का नतीजा है उसका तुमको दुख उठाना पड़ेगा॥

साधमार्गी भाइयों के प्रश्न मंदिर पंथियोंसे

प्रश्न १ मंदिर और प्रत्मा का बनाना आस्त्रबद्वार में है या संबर द्वार में है और नमस्कार करनी प्रत्मा को है या मंदिर को॥

प्रश्न २ भगवान की आज्ञा संबर की है या

आस्त्रव की और मोक्ष का देनेवाला संवर है या आस्त्रव है ॥

प्रश्न ३ मंदिर धर्म स्थान है या पाप स्थान है और तुम्हारे धर्म में जीव की हिंस्या करना पाप है या धर्म है और भगवान ने छः काया के जीवों की दया फ़रमाई है या हिंस्या फ़रमाई है

प्रश्न ४ आप चार निषेपे मानते हो या नहीं और मुक्त का देनेवाला कौनसा निषपा है और प्रत्मा में कौनसा नषेपा पावे और साधओं में कौनसा निषेपा पावे ॥

प्रश्न ५ जो संघारी प्रन्मा की पूजा सिताम्ब री करते हैं उनको आप समदृष्टी मानते हो या मिथ्याती मानते हो ॥

प्रश्न ६ आप रामचन्द्रजी महाराज को मानते हो या नहीं जो वैशनव भाई श्री रामचन्द्रजी की मूर्ती पूजते है उसमें धर्म मानते हो या पाप मानते हो किस वास्ते कि वह भी मुक्ती में गये ॥

प्रश्न ७ मोक्ष धर्मसे है या ज्ञात से अगर धर्मसे है तो किस ज्ञात को धर्म करने का हक है

और अगर ज़ात से है तो किस किस ज़ात से मोक्ष है और साधू किस ज़ात का होना चाहिये और भगवान या तिर्थंकरों के पास किस किस कुल के साधू हुयेथे ॥

॥ समाप्तम् ॥

॥ शुभम् ॥